P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-7* ISSUE-6* February- 2020
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

बालिकाओं की उच्च प्राथमिक शिक्षा के सार्वभौमिकरण का अध्ययन (नवलगढ़ तहसील के संदर्भ में एक भौगोलिक अध्ययन)

Study of Universalization of Upper Primary Education of Girls (A Geographical Study With Reference To Nawalgarh Tehsil)

प्रियंका
शोधार्थी,
भूगोल विभाग,
महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय,
अजमेर, राजस्थान, भारत

सारांश (Abstract)

समस्त प्राणिजात मे केवल मनुष्य के लिए ही षिक्षा एवं सभ्यता के मानक आवश्यक रूप से निर्धारित किये गये हैं। मानव भूगोल के उद्देश्यों के अनुरूप एक प्राणिशास्त्रीय जीव को सांस्कृतिक मानव के रूप मे प्रतिष्ठित करना बड़ी चुनौति है जो शैक्षिक उपचारों के बिना सम्भव नहीं है। वर्तमान में विभिन्न भोगोलिक एवं जलवायवीय विषमताओं के कारण राजस्थान शैक्षिक दृष्टि से अत्यन्त निचले पायदान पर स्थित है जिसमें भी महिला साक्षरता के विषय मे 52.1 प्रतिशत साक्षरता के साथ बिहार एवं झारखण्ड़ जैसी असंतोषजनक स्थितियाँ देखने को मिलती है। अर्द्धशुष्क राजस्थान में स्थित आंतरिक प्रवाह क्षेत्र जो शेखावाटी के नाम से जाना जाता है, जहाँ अध्ययन क्षेत्र नवलगढ़, जिला झुंझुनू की भी अवस्थिति है। जनसंख्या संरचना की दृष्टि से जनगणना वर्ष 2011 मे प्राप्त समंकों के अनुसार जहाँ जिला झुंझुनू मे कुल 2,31,7,045 ज.सं. दर्ज की गई वहीं अध्ययन क्षेत्र मे यहा आँकड़ा 95,346 रहा। इसी प्रकार लिंगानुपात के विषय मे क्रमशः 950 एवं 930 महिला प्रति एक हजार पुरूष संगठित की गई।बाल लिंगानुपात की दृष्टि से इस क्षेत्र का प्रदर्शन अत्यधिक निराशाजनक रहा है जो क्रमशः 837 एवं 863 महिला शिशु प्रति एक हजार पुरूष शिशु दर्ज किया गया है। यदि कार्यशील जनसंख्या की दृष्टि से विचार किया जाये तो जिला झुंझुनू मे जहाँ 7,74,933 व्यक्ति संगणित किये गये वहीं अध्ययन क्षेत्र मे कार्यषील जनसंख्या के रूप मे कुल 17,339 व्यक्ति जबकि अकार्यशील ज.सं. के रूप मे 44588 व्यक्ति संगणित किये गये, जिनका प्रतिषत क्रमशः 18,19 एवं 46.76 परिकल्पित हो सका है।

साक्षरता की दृष्टि से यहाँ पुरूष वर्ग की स्थितियाँ तुलनात्मक रूप से अधिक संतोषजनक है जबकि स्त्री शिक्षा को लेकर काफी कुछ काम किये जाने की आवश्यकता है क्योंकि क्षेत्र में जहाँ पुरूष वर्ग की साक्षरता का प्रतिशत 68 रहा है वहीं स्त्री वर्ग के लिए यह आँकड़ा महज 46 प्रतिशत ही दर्ज किया जा सका है।

वर्तमान में यहाँ बालिका शिक्षा के सार्वभौमिकरण पर सर्वाधिक बल दिया जा रहा है। छात्राओं के अपव्यय व अवरोध का पता लगाकर इसे दूर करने के प्रयास किये जा रहे हैं।

The standards of education and civilization have been set essentially only for human beings in all animals. In accordance with the objectives of human geography, it is a big challenge to classify a biological organism as a cultural human being which is not possible without educational remedies. Presently, due to various geological and climatic inequalities, Rajasthan is ranked at the very bottom in educational terms, with 52.1 percent literacy in the subject of women literacy and unsatisfactory situations like Bihar and Jharkhand. The standards of education and civilization have been set essentially only for human beings in all animals. In accordance with the objectives of human geography, it is a big challenge to classify a biological organism as a cultural human being which is not possible without educational remedies. Presently, due to various geological and climatic inequalities, Rajasthan is ranked at the very bottom in educational terms, with 52.1 percent literacy in the subject of women literacy and unsatisfactory situations like Bihar and Jharkhand.The internal flow zone located in semi-arid Rajasthan known as Shekhawati, where the study area Nawalgarh, district Jhunjhunu, is also located. According to the data obtained in the census year 2011, in terms of population structure, in the district Jhunjhunu, a total of 2,31,7,045 H.S. In the study area, the number recorded here was 95,346. Similarly, about 950 and 930 women per thousand men were computed in the subject of sex ratio respectively. The performance of this sector has been very disappointing in terms of child sex ratio, which has been recorded at 837 and 863 female infants per one thousand male infants respectively. If considered from the point of view of working population, then in Jhunjhunu district, 7,74,933 persons were computed while in the study area a total of 17,339 persons as working population, whereas non-working JNO. As many as 44588 people were computed, whose percentage has been envisaged 18,19 and 46.76 respectively. In terms of literacy, the status of the male class here is comparatively more satisfactory, while a lot of work needs to be done on the issue of female education as the percentage of literacy of the male class in the area is 68, whereas this figure for the female class is only 46. Only the percentage has been recorded. At present, maximum emphasis is being laid on universalisation of girl child education here. Efforts are being made to remove wastage and obstruction of girl students by removing it.

मुख्य शब्द : अर्द्धशुष्क, सार्वभौमिकरण, अपव्यय, अवरोधन।
Keywords: Semi-Dry, Universalization, Wastage, Interception.

प्रस्तावना

शिक्षा मानवीय चेतना का वह ज्यातिर्मय सुसंस्कृत पक्ष है, जिससे उसके व्यक्तित्व का बहुमुखी विकास होता है। लॉक का मत है, "पौधो का विकास कृषि द्वारा एवं मनुष्य का विकास शिक्षा द्वारा होता है।" बालक जन्म के समय असहाय और अबोध होता है, लेकिन धीरे–धीरे निरन्तर प्रयास द्वारा तथा शिक्षण की सीढी पर चढते हुए वह एक दिन उन्नत सामाजिक प्राणी बन जाता है। डी.वी. ने सत्य ही कहा है कि भोजन की जो महता और उपयोगिता शरीर के लिए है वही शिक्षा की सामाजिक जीवन के लिए है।

अध्ययन क्षेत्र का परिचय

राजस्थान को अपनी ऐतिहासिक विरासत के लिए जाना जाता है। इसी राजस्थान में एक अर्द्ध शुष्क क्षेत्र है जिसे शेखावाटी के नाम से जाना जाता है। सीकर, चुरू और झुन्झुनूं जिलों को संयुक्त रूप से शेखावाटी कहा जाता है। झुन्झुनूं शहर जुझार सिंह नेहरा के नाम पर संन् 1730 में बसाया गया था। वीरता के बाद जिले का धर्म, कर्म तथा शिक्षा के मामले में अलग मुकाम हैं।

शैक्षिक स्थल के रूप में नवलगढ़ शहर झुन्झुनूं जिले में ही स्थित हैं। यह झुन्झुनूं शहर से 39 किलोमीटर दूर स्थित है। यह 27.82^0 उत्तर से 75.27^0 पूर्व के मध्य अवस्थित है। तहसील का औसत ग्रीष्मकालीन तापमान 46–48 तथा औसत शीतकालीन तापतान 25–30 के मध्य रहता है। नवलगढ़ तहसील की वर्तमान कुल जनसंख्या 95,346 है तथा पुरूष साक्षरता 68 प्रतिशत तथा महिला साक्षरता 46 प्रतिशत है।

समस्या का औचित्य

प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक शिक्षा के मामले में पूरा देश पिछड़ा हुआ है। देश में 6–10 वर्ष के बीच के साढे दस करोड़ में से 3 करोड 20 लाख बच्चे स्कूल नहीं जा पाते। राजस्थान में 2001 में महिला साक्षरता दर 43.8 प्रतिशत थी जो 2011 में बढकर 52.12 प्रतिशत हो गयी। जिसका प्रभाव देश के सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक एवं सांस्कृतिक विकास पर पड़ता है। इस स्थिति को दूर करने के लिए बालिकाओं की शिक्षा के सार्वभौमिकरण पर सर्वाधिक बल दिया जाये।

लड़कियों को जहाँ घर के काम काज के लिए स्कूल छुड़वा दिया जाता है वहीं लड़कों को जीविकोपार्जन के लिए हमारे समाज में प्रौढ़ वर्ग में यह धारणा गहराई तक समायी हुई है कि बालिकाओं का कार्यक्षेत्र घर की चारदीवारी के अंदर है।

अतः शिक्षा के प्राथमिक स्तर पर झुन्झुनूं जिले की नवलगढ़ तहसील के संदर्भ में बालिकाओं के नामांकन की क्या स्थिति है। छात्राओं के अवरोधन तथा उपस्थिति को कौन–कौन से कारक प्रभावित करते है आदि जानकारियां प्राप्त करने के लिए शोधकर्ता ने इस विषय को अनुसंधान के लिए चुना है।

शोध अध्ययन के उद्देश्य

1. उच्च प्राथमिक विद्यालयों में बालिकाओं के नामांकन का अध्ययन करना।
2. बालिकाओं की उपस्थिति, अपव्यय एवं अवरोधन को प्रभावित करने वाले कारकों का अध्ययन करना।
3. उच्च प्राथमिक विद्यालयों में बालिकाओं की अनुपस्थिति का अध्ययन करना।

शोध परिकल्पना

1. उच्च प्राथमिक स्तर पर बालिकाओं का नामांकन स्थिति संतोषजनक नहीं है।
2. बालिकाऐं उच्च शिक्षा प्राप्त करने की आकांक्षा रखती है।
3. उच्च प्राथमिक स्तर पर सत्र के मध्य में विद्यालय छोड़ देने वाली बालिकाओं की संख्या अधिक है।

शोध विधि

प्रस्तावित शोध कार्य में प्राथमिक व द्वितीयक श्रोतों से आंकड़े प्राप्त किये गये है। प्राथमिक आंकड़े अवलोकन, साक्षात्कार प्रश्नावली आदि के माध्यम से प्राप्त किये गये है जबकि विद्यालय में बालक–बालिका संख्या, साक्षरता, नामांकन, ड्राप आउट रेट आदि से सम्बन्धित आंकड़े द्वितीयक स्रोतों से लिये गये है।

प्रस्तुत अनुसंधान में नवलगढ़ तहसील के उच्च प्राथमिक विद्यालयों को न्यादर्श के रूप में लिया गया है। प्रस्तुत अनुसंधान के न्यादर्श में निम्नलिखित सम्मिलित थे–

1. तहसील के विद्यालयों में कक्षा 6 से 8 तक पढ़ने वाली 100 बालिकायें।
2. तहसील के विद्यालयों की छात्राओं के 100 अभिभावक।
3. तहसील के विद्यालयों के 100 अध्यापक।

बालिकाओं की विद्यालय से अनुपस्थिति के कारण

विकल्प	बालिकाओं का मत (प्रतिशत में)	अध्यापको का मत (प्रतिशत में)	अभिभावकों का मत (प्रतिशत में)
मेहमानों का आना	35 प्रतिशत	–	32 प्रतिशत
माता–पिता की अस्वस्थता	62 प्रतिशत	–	28 प्रतिशत
घर के कामों में व्यस्तता	40 प्रतिशत	70 प्रतिशत	–
घर से विद्यालय की अधिक दूरी	74 प्रतिशत	16 प्रतिशत	–
विद्यालय में शिक्षकों की कमी	30 प्रतिशत	12 प्रतिशत	–

प्रस्तुत शोध में बालिकाओं की विद्यालय से अनुपस्थिति के कारणों को जानने के लिए एक प्रश्नावली भरवायी गयी जिसमें 35 प्रतिशत बालिकायें और 32 प्रतिशत अभिभावक मेहमोनों के आने को बालिकाओं की विद्यालय से अनुपस्थिति का कारण मानते है, किन्तु अध्यापकों ने इस कारण को कोई महत्व नहीं दिया। घर के कामों में व्यस्तता को 40 प्रतिशत बालिकायें और 70 प्रतिशत अध्यापक अनुपस्थिति का कारण मानते है। जबकि कोई भी अभिभावक इस कारण से सहमत नहीं है। माता–पिता की अस्वस्थता को अनुपस्थिति का कारण मानने वाली बालिकाये 62 प्रतिशत तथा अभिभावक 28 प्रतिशत है। अध्यापक इस कारण से असहमत है।

इस प्रकार घर के कामों में व्यस्तता को अनुपस्थिति का कारण मानने वाले अध्यापकों का प्रतिशत सर्वाधिक 70 प्रतिशत है। माता पिता की अस्वस्थता को अनुपस्थिति का कारण बताने वाली बालिकाओं का प्रतिशत सर्वाधिक 62 प्रतिशत है। इसी प्रकार मेहमानों के आने को अनुपस्थिति का कारण मानने वाले अभिभावकों का प्रतिशत सर्वाधिक 32 प्रतिशत है। इस प्रकार तीनों ही मतों में भिन्नता प्राप्त हो रही है।

शोध में शिक्षा प्राप्त करने के संदर्भ में बालिकाओं तथा अभिभावकों आकांक्षा स्तर को साक्षात्कार द्वारा प्राप्त किया गया, जिसमें 10 प्रतिशत बालिकायें प्राथमिक स्तर तक 6 प्रतिशत बालिकायें उच्च प्राथमिक स्कूल तक, 30 प्रतिशत बालिकायें निम्न माध्यमिक स्तर तक, 15 प्रतिशत बालिकायें उच्च माध्यमिक स्तर तक, 14 प्रतिशत बालिकायें स्नातक स्तर तक ही शिक्षा प्राप्त कराने की इच्छा प्रकट नहीं की है। 12 प्रतिशत अभिभावक उच्च प्राथमिक स्तर तक, 56 प्रतिशत अभिभावक माध्यमिक स्तर तक, 12 प्रतिशत अभिभावक स्नातक स्तर तक अपनी बालिकाओं को पढ़ाना चाहते है। शोध कार्य में विद्यालय भवन तथा उपकरणों के प्रति संतुष्टि स्तर को भी जाना गया। घर से विद्यालय की अधिक दूरी को भी 74 प्रतिशत बालिकाओं ने अनुपस्थिति का कारण माना।

शिक्षण संस्थाएं नवलगढ, तहसील

वर्ष	मा.एवं उच्च मा. विद्यालय	उच्च प्राथमिक विद्यालय	योग
2006–07	72	115	187
2009–10	118	129	247
2012–13	130	67	197
2015–16	175	67	242
2018–19	133	112	245

शिक्षण संस्थाओं में छात्र (श्रेणी एवं लिंगानुसार)

वर्ष	छात्र			छात्राऐं			कुल योग
	मा.एवं उच्च मा. विद्यालय	उच्च प्राथमिक विद्यालय	योग	मा.एवं उच्च मा. विद्यालय	उच्च प्राथमिक विद्यालय	योग	
2006–07	10302	11786	22088	7799	10312	18111	40199
2009–10	13234	8395	21629	10019	7554	17873	39502
2012–13	15045	705	15747	18343	1001	19344	35091
2015–16	13530	702	14232	10560	1001	11561	25793
2018–19	19903	6407	26310	16419	5437	21856	48166

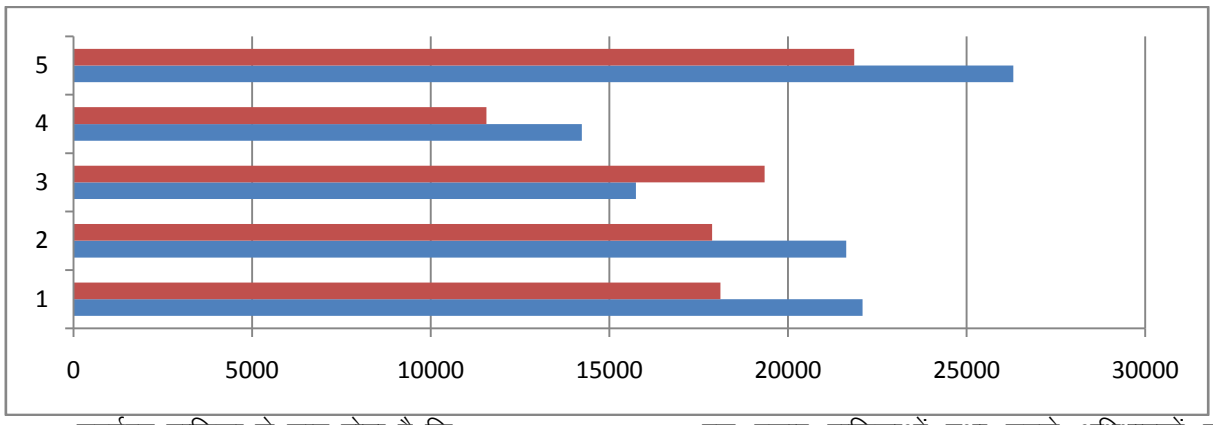

उपर्यक्त तालिका से ज्ञात होता है कि 2006–07 से 2018–19 तक उच्च माध्यमिक स्तर पर छात्रों की तुलना में छात्राओं की संख्या में कमी हुई। लेकिन माध्यमिक व उच्च माध्यमिक विद्यालय तथा उच्च प्राथमिक विद्यालय में केवल छात्राओं के तुलनात्मक अध्ययन में उच्च माध्यमिक स्तर पर छात्राओं की संख्या में वृद्धि हुई है। 2006–07 से 2018–19 तक बालिकाओं की नामांकन संख्या स्थिति संतोषजनक कही जा सकती है।

सर्व शिक्षा अभियान द्वारा बालिकाओं हेतु शुरू की गयी प्रमुख योजनाऐं

कस्तूरबा गांधी आवसीय योजना

इस योजना के तहत एस.सी/एस.टी./ओ.बी.सी./अल्पसंख्यक/बीपीएल परिवारों की बालिकाओं के लिए निःशुल्क आवास, भोजन, शिक्षा की व्यवस्था की गयी है।

अपना बच्चा अपना विद्यालय योजना

सत्र 2016–17 में छात्राओं के नामांकन, ठहराव को सुनिश्चित करने के लिए तथा प्रारम्भिक शिक्षा के शत् प्रतिशत लक्ष्य को पूरा करने के उद्देश्य से यह योजना शुरू की गयी है।

मध्यान्ह भोजन योजना

1 जुलाई 2002 से राज्य के सभी विद्यालयों को भोजन प्रत्येक शैक्षणिक दिवस के दौरान उपस्थित प्रत्येक छात्रा को उपलब्ध करवाया जा रहा है ताकि विद्यालय में छात्राओं का ठहराव सुनिश्चित हो सके।

बेटी बचाओं बेटी पढाओं योजना

घटते लिंगानुपात और बेटियों को प्रारम्भिक स्तर तक पूर्ण रूप से शिक्षित करने हेतु यह योजना शुरू की गयी है। राष्ट्रीय बालिका दिवस पर 24 जनवरी को नई दिल्ली में झुन्झुनूं जिले को सम्मानित किया जायेगा।

आंकड़ों का विश्लेषण करने के पश्चात् निम्न निष्कर्ष प्राप्त हुए–

1. अनुपस्थिति के कारणों का अध्ययन करने पर छात्राओं ने माता पिता की अस्वस्थता, अभिभवकों ने मेहमानों का आना तथा अध्यापकों ने गृहकार्य में व्यवस्तता को सर्वाधिक महत्वपूर्ण कारण माना है।
2. माध्यमिक स्तर तक शिक्षा प्राप्त करने की आकांक्षा रखने वाली बालिकाओं का प्रतिशत और इसी स्तर तक अपनी बालिकाओं को शिक्षा दिलाने की इच्छा रखने वाले अभिभावकों का प्रतिशत सर्वाधिक है। इस प्रकार बालिकाओं तथा उनके अभिभावकों का आकांक्षा स्तर भी उच्च नहीं है। अतः दूसरी परिकल्पाना – "बालिकायें उच्च शिक्षा प्राप्त करने की आकांक्षा रखती है।" असत्य सिद्ध होती है।
3. विद्यालय भवन तथा उपकरणों के प्रति संतुष्टि के स्तर पर अध्ययन करने पर ज्ञात हुआ कि विद्यालय के फर्नीचर से संतुष्ट बालिकाओं और विद्यालय के शिक्षको से संतुष्ट अभिभावकों का प्रतिशत सर्वाधिक है जबकि 52 प्रतिशत अभिभावक विद्यालय की प्रत्येक चीज से असंतुष्ट है।

सुझाव

1. यह अध्ययन बालिकाओं पर केन्द्रित है इसी प्रकार का अध्ययन बालकों पर भी किया जा सकता है।
2. विद्यालयों के बालक और बालिकाओ में कुंठा, नैराश्य दुश्चिता का अध्ययन किया जा सकता है।
3. परिषदीय विद्यालयों के बालक और बालिकाओ की उपलब्धि, उपस्थिति, अपव्यय और अवरोधन का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।
4. विद्यालयों के बालक और बालिकाओं में आर्थिक, सामाजिक व शैक्षिक स्तर का प्रदेश व्यापी अध्ययन किया जा सकता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

गुप्ता डॉ. एस.पी. – भारतीय शिक्षा का इतिहास, विकास एवं समस्याऐं।

गुप्ता डॉ. आर.पी. – शिक्षा की बुनियाद–सहभागिता, आखर जोत पृ.स44, राज्य साक्षरता मिशन प्राधिकरण, अप्रेल जून 2005

मदन मोहन, भारतीय शिक्षा का विकास और समस्याऐं कैलाश प्रकाशन इलाहाबाद 1993–94

वर्मा प्रीति एवं श्रीवास्तव डी.एन., मनोविज्ञान और शिक्षा में सांख्यिकी, विनोद पुस्तक मंदिर आगरा 1982

पत्र पत्रिकाएं

शिक्षा चिंतन, सर्व शिक्षा अभियान (लेख)

अक्टूबर 2005, मार्च 2006 त्रिमूर्ति संस्थान, कानपुर

जिला सांख्यिकीय रूपरेखा झुन्झुनूं 2006 से 2019

Website

www.rajeducationportal.gov.in

www.ssa.in

www.nuepa.org